

‘धुंध से उठती धुन’ में व्यक्त अकेलापन बनाम एकांत

संजीत,

शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध-सार

निर्मल वर्मा की डायरी ‘धुंध से उठती धुन’ में लेखक ने अपने लेखन के माध्यम से उन गहरी मानसिक स्थितियों और आंतरिक संघर्षों को उजागर किया है, जो अकेलेपन और एकांत के बीच के भेद को समझने में मदद करते हैं। इस डायरी में वे ‘धुंध’ और ‘धुन’ के प्रतीकों के माध्यम से अकेलेपन और एकांत की संवेदनाओं को व्यक्त करते हैं, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन के संघर्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि व्यापक रूप से समाज और अस्तित्व के मायनों को भी उजागर करते हैं।

‘अकेलापन’ और ‘एकांत’ निर्मल वर्मा की डायरी में एक-दूसरे से अलग, लेकिन गहरे रूप से जुड़ी हुई भावनाएँ हैं। जहाँ अकेलापन एक ऐसी मानसिक स्थिति के रूप में प्रकट होता है, जो व्यक्ति को भीतर से खाली और निर्जन महसूस कराता है, वहीं एकांत एक स्वतंत्रता, आत्मसात और आत्मविकास का मार्ग है। निर्मल वर्मा की डायरी हमें यह दर्शाती है कि अकेलापन केवल शारीरिक या सामाजिक एकाकीपन का परिणाम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की मानसिक स्थिति और आंतरिक खालीपन का प्रतिबिंब है। उनकी डायरी में यह अंतर स्पष्ट रूप से उभरता है कि कैसे ‘धुंध’ और ‘धुन’ के रूपक का प्रयोग करके वे अकेलेपन को एक खतरनाक, अंधेरे रास्ते के रूप में और एकांत को आंतरिक स्वतंत्रता और शांति के मार्ग के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

बीज-शब्द: अकेलापन, डायरी, पीड़ा, एकांत, मानसिक स्थिति, आंतरिक संघर्ष, स्वतंत्रता, आत्मविश्लेषण

डायरी हिंदी की आधुनिक विधा है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने आपको पूर्णता में खँगाल सकता है। डायरी वह विधा है जहाँ रचनाकार को किसी से कोई अभिलाषा नहीं है, वह अपने आप से बात कर रहा है तथा अपने आपको जानने-समझने की कोशिश कर रहा है। ऐनी फ्रैंक ने अपने डायरी में लिखा है ‘कागज में, मनुष्यों के अपेक्षा ज्यादा धैर्य है।’ (Paper has more patience than people) यह धैर्य अपने आपको पूर्णता में जानने-समझने का है। अपने दुखों से अवगत होने का है, अपने भड़ास को पृष्ठों पर उतारने का है। अपने बातों से अवगत कराने का कागज इंसान को पूरा समय देता है। जीवन में तमाम ऐसे दुख होते हैं जिसे हम किसी

को नहीं बता सकते, क्योंकि उस दुख को बताने के पश्चात हमें एक किस्म के खौचे में डाल दिये जाने का डर होता है। इसलिए इस डर को जीतने के लिए व्यक्ति डायरी लिखता है। अपने दुखों से तथा अपने अकेलेपन से अवगत होता है। परंतु क्या वह अकेलापन है अथवा एकांत?

अकेलापन एक ऐसी अवस्था है जहाँ व्यक्ति को किसी चीज की कमी होती है और एकांत वह अवस्था है जिसमें आप अकेले होते हैं लेकिन आपको अकेलापन महसूस नहीं होता। आप कामू के ‘द मिथ ऑफ सिसिफस’ के यूनानी नायक ‘सिसिफस’ हो जाते हैं। जहाँ यूनानी नायक ‘सिसिफस’ शापग्रस्त है, उसे एक चट्टान

को पहाड़ पर धकेलना है और जैसे ही चट्टान शीर्ष पर पहुँचने लगेगी वैसी ही चट्टान लुढ़क जाएगी और सिसिफस को फिर से शुरुआत करनी होगी। कामू ने बताया कि हम इंसान भी दरअसल यही करने को अभिशप्त हैं पर उन्होंने सिसिफस के मदेनजर इंसानों से कहा कि हमें सिसिफस को वह करते हुए खुश मानना चाहिए। (One must Imagine Sisypheus happy) अकेलापन और एकांत में यही मूलभूत अंतर है।

हिंदी साहित्य में डायरी लेखन की विधा को 6-7 दशक हो चुके हैं। ऐसे में अनेक डायरी साहित्य जगत में चर्चा का विषय बनी। डायरी अपने शुद्ध रूप में स्वयं को संबोधित रचना है। उसका लेखक ही उसका पाठक भी होता है। डायरी लेखक किसी को कुछ नहीं सुनाना चाहता। अपने आप से बात करना ही उसका उद्देश्य होता है। डायरी में ज्यादातर तात्कालिक प्रतिक्रियाएँ होती हैं। डायरी लेखन में निरंतरता होती है। ऐसा हो सकता है कि डायरी लेखक में कई बार विरोधाभास नजर आए क्योंकि एक वक्त में मनुष्य कुछ और सोचता है और अनुभवों के विस्तार के पश्चात कुछ और सोचने-समझने लगता है। परंतु उस विचार यात्रा को समझने में डायरी बेहद सहायक होती है। कमलेश्वर 'डायरियां एक लेखक का अपना रेगिस्तान' में लिखते हैं :- "डायरियां, लेखक का अपना और अपने हाथ से किया हुआ पोस्ट-मार्टम होती है। एक लेखक कैसे तिल-तिल जीता और मरता है- अपने समय को सार्थक बनाते हुए खुद को कितना निरर्थक पाता जाता है और अपनी निरर्थकता में से कैसे वह अर्थ पैदा करता है - इसी रचनात्मक आत्म-संघर्ष को डायरियां उजागर करती हैं।"¹

इस पोस्ट मार्टम के अंतर्गत व्यक्ति अपने अंदर के दुनिया को देखता-समझता है, अपने आपको खँगालने का कार्य करता है। अपने सोच-विचार की 'पूँछ' पकड़ने की कोशिश करता

है और इस सारी प्रक्रिया में लेखक हमेशा अकेला होता है। टॉमस मान ने लिखा है:- "लिखना एक सक्रिय क्रिस्म की उम्मीद है।" यह उम्मीद ही है जो व्यक्ति को लिखने के लिए प्रेरित करती है। घोर निराशा व अंधकार में व्यक्ति लिख रहा होता है। उसे अपने अकेलेपन से जूझते हुए एकांत की ओर बढ़ना होता है। वह अपने आप की तलाश करते हुए लिखता जाता है और इस यात्रा में डायरी उसकी सहयात्री हो जाती है। लेखक अपने आस-पास के तमाम लोगों से उकता जाता और अंत में अपने आप से पूछता है :-

"सब के बीच - इतना अकेला क्यों हूँ? आखिर क्यों ?

जागते-जागते तीन बज गए हैं। सिर्फ मेरी टूटी घड़ी मेरे साथ जाग रही है।"²

यह अकेलापन व्यक्ति को अंदर ही अंदर से खा रहा होता है। वह अपने से लड़ता-झगड़ता, लहलुहान होता हुआ शंकाओं से निपटने की कोशिश करता है। वह अपने आप पर संशय करता है, अपने समाज पर, अपने विचार पर संशय करता है परंतु इस सब के बावजूद उसका 'मैं' उसके साथ होता है। निर्मल वर्मा लिखते हैं :- "मेरे विचार में अपने सब खतरों और आत्म भ्रांतियों के बावजूद मनुष्य की सबसे बड़ी ठोस और विश्वसनीय निधि उसका 'मैं' है। जिसमें उसका नर्क और ईश्वर दोनों शामिल हैं।"³

इसी 'मैं' से लड़ता-झगड़ता व्यक्ति अकेलेपन से एकांत की ओर बढ़ता है। वह अपने डर से भागना नहीं चाहता अपितु उसका सामना करता है, उससे जीतने की होड़ लगाता है। काफ़ी अपनी डायरी में लिखते हैं :- "मैं अकेला सोता हूँ। तुम इसे मेरा साहस मान सकते हो, वास्तव में यह डर है। जिस तरह फर्श पर सोते हुए व्यक्ति को गिरने का खतरा नहीं होता, उसी तरह मुझे लगता है कि जब तक मैं अकेला हूँ। मुझे कुछ नहीं हो सकता।"

जिस डर की ओर काफ़का सूचित कर रहे हैं उसी डर को अलग-अलग लोगों ने अपने विचार अपने जीवनशैली में महसूस किया है। वह डर है अकेले हो जाने का डर, समाज के तथाकथित सफलताओं में ठीक बैठने का डर। सर्वप्रथम इस डर से अवगत होना ही अकेलेपन से एकांत की ओर अग्रसर होने की पहली सीढ़ी है। निर्मल वर्मा अपनी डायरी 'धुंध से उठती धुन' में इसी प्रश्न पर विचार करते नजर आते हैं। 'धुंध से उठती धुन' का अर्थ ही बेहद अंदर से निकलने वाली धुन यानि आवाज है। निर्मल वर्मा ने अपने डायरी के पहले अध्याय का नाम 'पीड़ा में पक्षी' रखा है। जिसके अंतर्गत वे मानव व अपने निराशा, दुख, अकेलेपन, एकांत और ऐसे अनेक मुद्दों पर बात करते नजर आते हैं। निर्मल पीड़ा से मुक्ति के संदर्भ में लिखते हैं— "हर पीड़ायुक्त निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए हमें उसे दैनिक जीवन का स्वाभाविक अंग बनाना होगा।"⁴

अकेलापन अथवा एकांत में यही अंतर है जब तक हम उसे अपने से परे, ओढ़ा हुआ मानते जाते हैं तब तक व अकेलापन नजर आता है और जैसे ही हम किसी दुख को किसी पीड़ा को अपने जीवन का स्वाभाविक अंग मानने लगते हैं तो वह पीड़ा हल्की हो जाती है और हम एकांत की ओर अग्रसर होने लग जाते हैं। क्योंकि इससे बचने का और कोई विकल्प हमारे पास नहीं है, निर्मल लिखते हैं — "अगर मैं दुख के बगैर रह सकूँ तो यह सुख नहीं होगा, यह दूसरे दुख की तलाश होगी और इस तलाश के लिए मुझे बहुत दूर नहीं जाना होगा, वह स्वयं मेरे कमरे की देहरी पर खड़ा होगा — कमरे की खाली जगह को भरने के लिए।"⁵

यह मानना, स्वीकार करना कि दुख है उसका अन्य कोई और विकल्प नहीं है और इसे स्वीकारते हुए जीना एकांत है। निर्मल वर्मा उन सभी विचारधाराओं को खारिज करते हैं जो दुख

से, अकेलेपन से मुक्ति की बातें किया करते हैं। वे डायरी में एक जगह लिखते हैं :—

"मैं शायद मनुष्य को उसकी यातना से छुटाकारा दिलाने के लिए कुछ न कर सकूँ किन्तु मुझे उन झूठी विचारधाराओं के भीतर अपनी आत्मा को स्वच्छ रखने का कोई अधिकार नहीं जो मनुष्य को उसकी यातना से मुक्ति दिलवाने का दावा करती हैं और उसे और लंबा करती जाती हैं।"⁶

निर्मल वर्मा इस वाक्य की पुष्टि के लिए बहुत से रचनाकारों को उद्धृत करते हैं। कभी वे रिल्के के पास जाते हैं तो कभी रमण महर्षि के पास, कभी वे काफ़का के पास जाते हैं तो कभी कैथरीन मेन्सफील्ड के पास और उन सबका निचोड़ अपनी डायरी में प्रस्तुत करते हैं। दुख है, परंतु उसे स्वीकार करना और उससे निरंतर आगे बढ़ना एकांत की यात्रा है और लगातार उसे नकारना, उसका सामना करने से भागना अकेलापन है। इस अकेलेपन से लड़ने के लिए मनुष्य बाहरी दुनिया की तरफ बढ़ता है, वह चाहता है कि उसे कुछ ऐसा मिल जाए कि उसका अकेलापन खत्म हो जाए परंतु बहुत देर तक उसे कुछ भी लुभा नहीं पाती है और वह फिर अकेला पड़ जाता है। जैसा कि निर्मल स्वयं लिखते हैं — "अपनी धरती को बाहर से देखना उसे देखकर हमें अपने दुख, शिकायतें, पीड़ाएं—कितने क्षुद्र जान पड़ते हैं। पहली बार महसूस होता है कि हमारा अकेलापन — अंतरिक्ष में घूमती इस धरती के अथाह अकेलेपन से छिटककर हममें आ टपका है, जिसके कारण वह अंतरिक्ष में उतनी ही अकेली है, जितना हम इस दुनिया में।"

इस अकेलेपन से लड़ते-जूझते हुए आगे बढ़ना और घोर अंधकार में प्रकाश की ओर आगे बढ़ना ही मनुष्य होने की निशानी है। निर्मल इसी की ओर संकेत करते हैं। दुख और घोर अकेलेपन में भी हम हथियार नहीं डाल सकते और आगे बढ़ा जा सकता है जैसा कि कैथरीन मेन्सफील्ड अपनी डायरी में लिखती हैं — "मैं मरने से पहले

यह दर्ज कर देना चाहती हूँ कि मनुष्य की पीड़ा असीम है, किंतु उसका अतिक्रमण किया जा सकता है। प्रश्न उस पीड़ा के परे जाने का नहीं है, हमें उसे स्वीकार करना होगा। उसे अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाना होगा।”⁷

इस पीड़ा को स्वीकार करना ही एकांत है, उसे अपनी दैनिक जीवन का अंग बनाना ही एकांत है और उसकी बात काफ़ी से लेकर कामू और मोहन राकेश से लेकर निर्मल वर्मा तक अपनी डायरी में करते नजर आते हैं। वे अपने अकेलेपन से लड़ते हैं और अंततः एकांत की शरण में जाते हैं, निर्मल विभिन्न उदाहरणों से हमें यह समझाते हैं। जैसा कि कृष्णदत्त पालीवाल ने लिखा है:— “निर्मल वर्मा की डायरी मधुमक्खियों का छत्ता है जिसमें देसी-विदेशी फूलों से संग्रह किया हुआ मधु है।”⁸

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अकेलेपन से एकांत की ओर जाना, अपने आपको पूर्णता में समझना निर्मल अपनी डायरी के माध्यम से समझाते हैं। वे अपनी डायरी में लड़ते हैं, जूझते हैं, लहुलुहान होते हैं और शंकाओं से निपटते जाते हैं। तनाव, संशय, शंकाओं से खटते हुए कुछ भीतरी सच को बाहर लेकर आते हैं, अकेलेपन को खत्म करते हुए उसे अपने दैनिक जीवन का एक अध्याय मानकर एकांत की ओर चलना सिखाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. राकेश, मोहन. मोहन राकेश की डायरी, राजपाल एंड सन्ज, नई दिल्ली, संस्करण 2008,
2. भारती, धर्मवीर, ठेले पर हिमालय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सातवाँ संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या 31
3. वर्मा, निर्मल. दूसरी दुनिया, संभावना प्रकाशन, हापुड़ प्रथम संस्करण 1978, पृष्ठ संख्या 10
4. वर्मा, निर्मल. धुंध से उठती धुन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2024, पृष्ठ संख्या 17
5. वर्मा, निर्मल. धुंध से उठती धुन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2024, पृष्ठ संख्या 277
6. वर्मा, निर्मल. धुंध से उठती धुन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2024, पृष्ठ संख्या 70
7. वर्मा, निर्मल. धुंध से उठती धुन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2024, पृष्ठ संख्या 265
8. पालीवाल, कृष्णदत्त. निर्मल वर्मा और उत्तर औपनिवेशिक विमर्श, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या 249